अध्याय 9

भारतीय कृषि

परिचय–

भारत कृषि प्रधान देश है, यहाँ पर कुल जनसंख्या का 48.9 (जनगणना 2011 के अनुसार) प्रतिशत भाग प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आश्रित है तथा देश के सकल घरेलू उत्पात का 13.7 (सन् 2012–13) प्रतिशत भाग कृषि से प्राप्त होता है । भारत में कृषि कार्य प्रमुखतः जीवन निर्वहन के लिए किया जाता है जिसमें कृषक अपनी परम्परागत तकनीक के द्वारा कृषि भूमि पर उदर पूर्ति हेतु खाद्यान्न फसलों को उगाता है, जिसमें अतिरिक्त भाग को बेच कर अन्य आवश्यक उपभोग की वस्तुएं प्राप्त करता है। बड़ी जोतों पर अच्छे उपजाऊ मैदानी भागों में व्यापारिक स्तर पर कृषि की जाती है। भारतीय कृषि पर काल तथा परिस्थिति के प्रभाव के कारण इसके स्वरूप तथा आयामों में परिवर्तन होता रहा हैं। इसी कारण आज भारतीय कृषि के विविध स्वरूप हैं। इन विविध स्वरूपों को निम्न आधारों के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है।

भारतीय कृषि के विविध रूप

1. भारतीय कृषि के ऋतु आधारित रूप–

भारत में कृषि को ऋतुओं के आधार पर तीन भागों में बाटाँ गया है –

01. खरीफ फसल
02. रबी फसल
03. जायद फसल

अ. खरीफ फसल– ऐसी फसलें जो जून–जुलाई में बोयी जाती है तथा अक्टूबर–नवम्बर में काटी जाती है। ऐसी फसलों में चावल, मक्का, बाजरा, मूँगफली, मूँग, उड़द, गन्ना, सोयाबीन, इत्यादि प्रमुख है। ये फसलें मानसून से होने वाली वर्षा पर निर्भर होती है, परन्तु वर्तमान में कुछ भागों में सिंचाई के द्वारा भी बुआई की जाती है ।

ब. रबी– ऐसी फसलें जो अक्टूबर–नवम्बर में बोई जाती है तथा मार्च–अप्रैल में काटी जाती है। ऐसी फसलों में गेहूँ, चना, जौ, तिलहन (अलसी, सरसों) जीरा, धनिया, अफीम, इसबगोल की फसलें प्रमुख है। इसमें अधिकांश फसलें सिंचाई के विविध स्रोतों से उत्पादित होती है ।

स. जायद – इसमें मुख्य रूप से हरी सब्जियां एवं चारे की फसलें होती हैं जिसे फरवरी–अप्रैल में बोई जाती है जून–जुलाई में काटी जाती है। इसमें तरबूज, लौकी, ककड़ी खीरा आदि की फसलें ली जाती हैं।

2. भारतीय कृषि के फसलों पर आधारित रूप–

- खाद्यान्न फसल प्रधान कृषि – खाद्यान्न फसलें ऐसी फसलें हैं जिनका उपयोग खाने या भोजन के रूप में किया जाता हैं जैसे चावल, गेहूँ, मक्का, ज्वार, बाजरा, जौ व दालें इत्यादि।
- व्यावसायिक या औद्योगिक फसल प्रधान कृषि – व्यावसायिक या औद्योगिक फसलें वे हैं जिनका उपयोग व्यावसायिक कार्यों के लिए या उद्योग में कच्चे माल के रूप में किया जाता है। इन्हें मुद्रादायिनी फसलें कहा जाता है। इसमें गन्ना, कपास, जूट, तम्बाकू तथा तिलहन आदि फसलें सम्मिलित की जाती हैं ।
- बागानी फसल प्रधान कृषि – ऐसी फसलें जिन्हें विशाल बागानों में उत्पादित किया जाता हो तथा पेय व औद्योगिक कार्यों में उपयोग में लिया जाता हो जैसे चाय, काफी, रबड़, सिनकोना, गर्म मसाले इत्यादि।
- उद्यान फसलें –इसमें फल व सब्जियों को सम्मिलित किया जाता है।

भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसलें –

1. गेहूँ–

उत्तरी भारत की प्रमुख रबी फसल जो भारत के समशीतोष्ण भागों में बोई जाती है जिसके लिए 10° से 25° सेन्टीग्रेड तापमान तथा 25 से 75 सेन्टीमीटर वर्षा तथा हल्की दोमट व चिकनी मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है। भारत का 70 प्रतिशत गेहूँ उत्पादन पंजाब (21%), हरियाणा (6%), उत्तरप्रदेश (33%), मध्यप्रदेश, राजस्थान तथा बिहार में किया जाता है। राजस्थान में गेहूँ का उत्पादन गंगानगर, हनुमानगढ़, अलवर, भरतपुर, जयपुर, कोटा आदि में प्रमुखतः से किया जाता है। भारत गेहूँ उत्पादन की दृष्टि से विश्व में चीन व अमेरिका के बाद तीसरा बड़ा देश है। भारत में हरित क्रान्ति के प्रभाव से उत्पादन, उत्पादकता तथा उत्पादन क्षेत्र में वृद्धि के कारण से

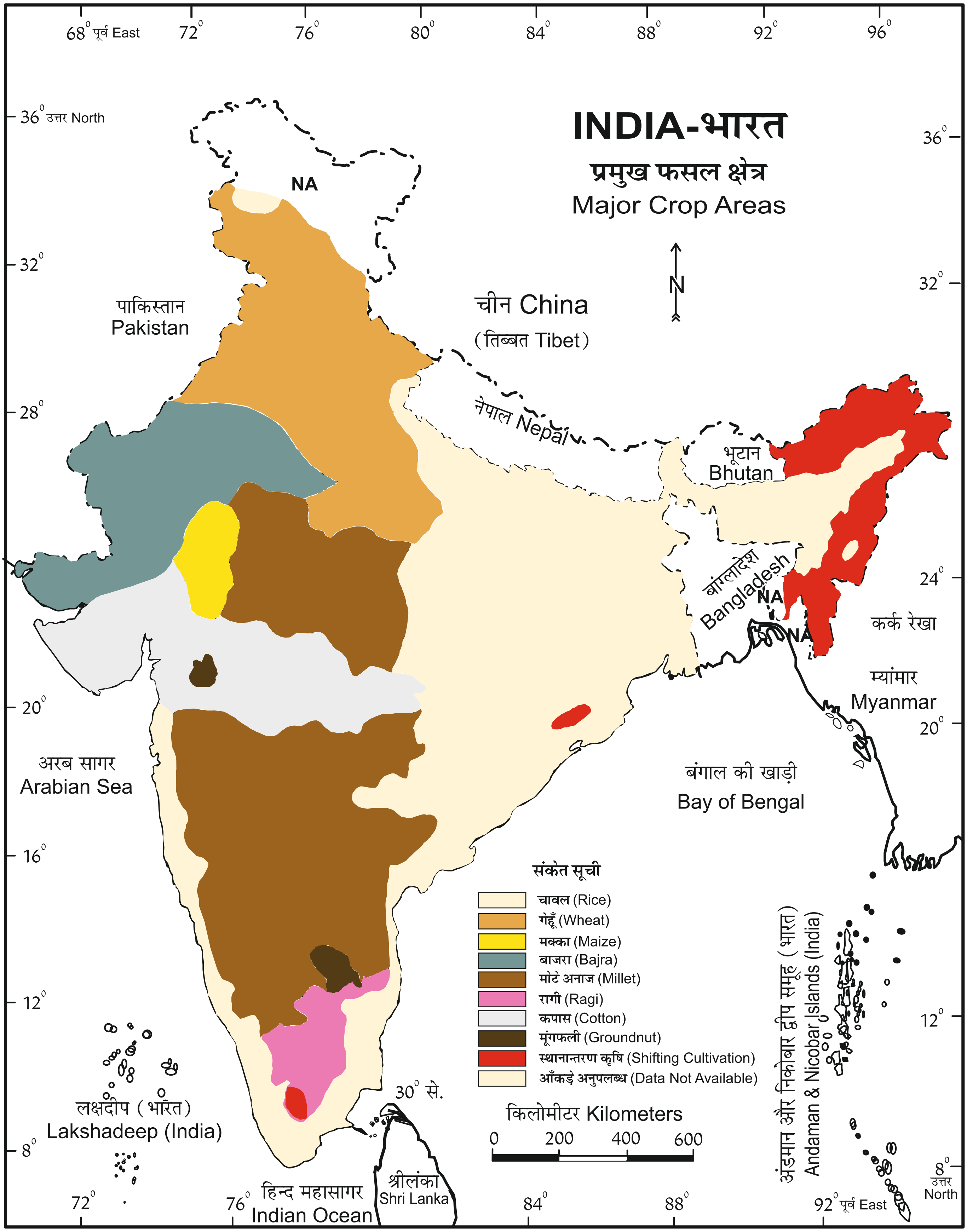

मानचित्र सं. 9.1 : भारत के प्रमुख फसल क्षेत्र

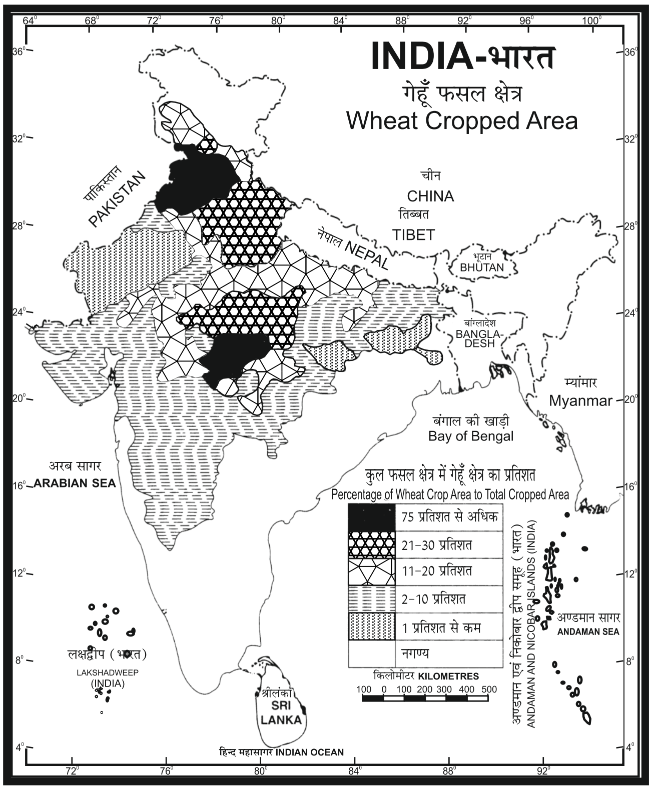

मानचित्र सं. 9.2 : भारत के गेंहू फसल क्षेत्र

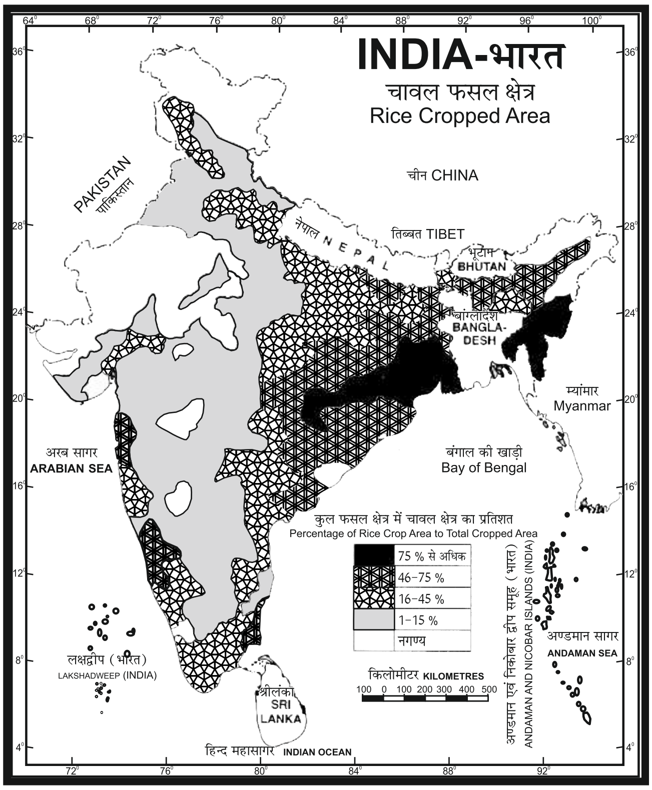

मानचित्र सं. 9.3 : भारत के चावल फसल क्षेत्र

आज देश गेंहू उत्पादन की दृष्टि से आत्मनिर्भर है।

2.चावल–

चावल भारत की मुख्य खाद्यान्न फसलों में से एक है। यह फसल वर्षा ऋतु में देश के अधिकांश भागों में बोई जाती है। इस कारण यह खरीफ की मुख्य फसल है। भारत में चावल की पैदावार उष्ण कटिबंधीय भागों में, जहाँ पर तापमान 16° से 27° सेन्टीग्रेड तथा वर्षा 100 से 200 सेन्टीमीटर के मध्य होती हो, की जाती है। इस फसल के उत्पादन के लिए नदी घाटी क्षेत्रों की चिकनी दोमट तथा कछारी मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है। भारत में ऋतुओं के अनुसार वर्ष भर में चावल की तीन फसलों अमन (शीत–कालीन), आउस (शरद–कालीन), बोरो (ग्रीष्म कालीन) को पैदा किया जाता है। यद्यपि देश का 86 प्रतिशत उत्पादन अमन अर्थात शीत काल में होता है, इस कारण इसे खरीफ की फसलों की श्रेणी में रखा गया है देश में चावल के कुल उत्पादन का 90 प्रतिशत भाग पं. बंगाल (15%), आन्ध्रप्रदेश (14%), उत्तरप्रदेश (12%), उड़ीसा, बिहार, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश तथा अन्य राज्यों में आसाम, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा आदि में किया जाता है । राजस्थान में चावल का उत्पादन गंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा व बूंदी में सिंचाई के द्वारा अल्प मात्रा में होता है। भारत चावल के उत्पादन की दृष्टि विश्व में चीन के बाद दूसरा बड़ा देश है ।

3. मक्का–

यह खाद्यान्न फसल के साथ औद्योगिक फसल है, जो स्टार्च व ग्लूकोज निर्माण करने वाले उद्योगों को कच्चा माल प्रदान करती है तथा खाद्यान्न के रूप में भी उपयोग में ली जाती है भारत में उत्पादित की जाने वाली चावल के बाद यह दूसरी प्रमुख खरीफ की फसल है, जिसे 17वीं. सदी में पुर्तगालियों के द्वारा भारत में लाया गया था। मक्का की फसल के लिए 12° से 35° सेन्टीग्रेड तापमान तथा वर्षा 50 से 100 सेन्टीमीटर तथा नाइट्रोजन युक्त गहरी मिट्टी जिसमें जल निकासी पर्याप्त मात्रा में हो, ऐसी दशा अच्छी मानी जाती है। भारत मक्का के उत्पादन की दृष्टि से विश्व का दसवां बड़ा देश है। देश में मक्का के कुल उत्पादन का 60 प्रतिशत भाग आन्ध्रप्रदेश (19%), कर्नाटक (17%), राजस्थान (10%), उत्तरप्रदेश (10%) एवं गुजरात से प्राप्त किया जाता है। मध्यप्रदेश एवं पंजाब में भी इसका अच्छा उत्पादन किया जाता है। राजस्थान में मक्का का उत्पादन कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, अजमेर, गंगानगर तथा हनुमानगढ़ में किया जाता है।

4. बाजरा–

भारत में मोटे अनाज की श्रेणी में ज्वार के बाद बाजरा महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है। बाजरा की खेती गर्म तथा शुष्क

जलवायु में जून से अक्टूम्बर के मध्य की जाती है। यह खरीफ की फसल है। इसके लिए 25° से 35° सेन्टीग्रेड तापमान, 50 सेन्टीमीटर से भी कम वर्षा तथा हल्की मिट्टी जिसमें जल निकासी की उपयुक्त दशा वाले भाग उत्तम होते है जिनमें बाजरा बोया जाता है। वैसे यह फसल सभी प्रकार की मिट्टी में बोई जा सकती है। देश में कुल बाजरा के उत्पादन का लगभग 85 प्रतिशत भाग राजस्थान (42%), महाराष्ट्र (20%), गुजरात (12%) एवं उत्तरप्रदेश (11%) में तथा शेष भाग अन्य राज्यों जैसे आन्ध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, कर्नाटक व पंजाब में उत्पादित किया जाता है। राजस्थान में बाजरा का उत्पादन जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, सीकर, गंगानगर, सीकर, झुंझुनूं, अलवर, जयपुर तथा जालोर जिलों में किया जाता है। भारत का बाजरा उत्पादन की दृष्टि से विश्व में प्रथम स्थान है।

भारत की प्रमुख दलहन फसलें (दालें) –

भारत की बड़ी जनसंख्या शाकाहारी है। इस कारण प्रोटीन के स्रोत के रूप में दालों का उपयोग किया जाता है। साथ ही दलहन की फसलों को किसानों द्वारा भूमि की उर्वरता बनाए रखने के कारण भी बोया जाता रहा है। भारत में दालें मूलतः रबी की फसल है वैसे खरीफ तथा रबी दोनों ऋतुओं में बोई जाती है। मूंग, मोठ, उड़द, अरहर आदि खरीफ की ऋतु तथा मटर, चना, मसूर आदि रबी की ऋतु में उत्पादित की जाती है। भारत में दालों के उत्पादन में भी एक तिहाई भाग चने की दाल का है। यह मुख्यतः उत्तरी भारत में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, प. बंगाल के मैदानी भागों में पैदा की जाती है। राजस्थान में चना का उत्पादन गंगानगर, हनुमानगढ़ व बीकानेर के नहरी सिंचाई वाले भागों में बहुतायत में किया जाता है। आन्ध्रप्रदेश व महाराष्ट्र राज्यों में भी चने की अच्छी फसल प्राप्त की जाती है। चने के बाद दूसरी प्रमुख दलहन फसल अरहर है, जो कि ज्वार, बाजरा व रागी के साथ बोई जाती है। इस फसल का उत्पादन महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, कर्नाटक, बिहार, मध्यप्रदेश, आन्ध्रप्रदेश में किया जाता है।

उड़द तथा मूंग को ज्वार, बाजरा व कपास के साथ भारत के कई भागों में बोया जाता है। राजस्थान मूंग के उत्पादन में देश में प्रथम है। यहां पर मूंग का उत्पादन अर्द्ध शुष्क मरूस्थलीय भागों में जालोर, नागौर, जोधपुर व पाली में किया जाता है। इसी प्रकार राजस्थान में उड़द को हाड़ौती में कोटा, बून्दी, झालावाड, तथा मेवाड़ में चित्तौड, उदयपुर, भीलवाड़ा, तथा दक्षिण राजस्थान में बांसवाड़ा में बोया जाता है। मसूर की दाल को रबी की फसलों के साथ पूर्वी राजस्थान में अलवर, भरतपुर व धौलपुर में बोया जाता है ।

भारत में खाद्यान्न फसलों का उत्पादन

कृषिगत फसलें	क्षेत्र लाख हैक्टेयर			उत्पादन (मिलियन टन)			उत्पादकता किलोग्राम प्रति हैक्टर		
वर्ष	2012.13	2013.14	2014. 15	2012.13	2013.14	2014. 15	2012.13	2013.14	2014. 15
चावल	427.54	441.36	438.56	105.24	106.65	104.8	2461	2416	2390
गेंहू	300.03	304.73	309.69	93.51	95.85	88.94	3117	3145	2872
मोटे अनाज	247.57	252.2	241.49	40.04	43.29	41.75	1617	1717	1729
दाले	232.56	252.13	230.98	18.34	19.25	17.2	789	764	744
कुल खाद्यान्न	1207.7	1250.42	1220.72	257.13	265.04	252.69	1996	2010.5	1933.75

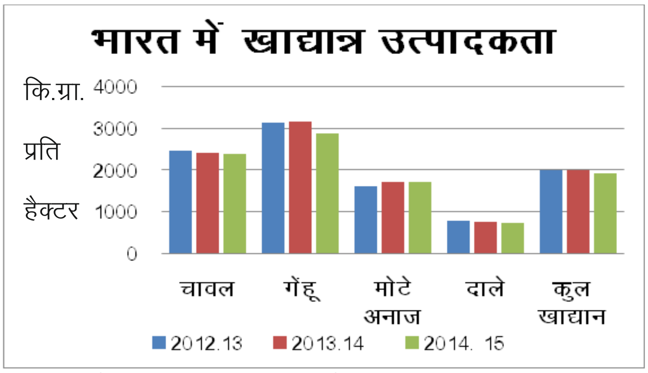

आरेख सं. 9.1 : भारत में खाद्यान्न उत्पादकता

भारत की प्रमुख मुद्रादायिनी/वाणिज्यिक/नकदी फसलें–

भारत में कुल कृषि भूमि के एक चौथाई भाग पर

मुद्रादायिनी फसलों का उत्पादन किया जाता है। ये फसलें जहां किसानों की आय का साधन है वहीं उद्योगों को कच्चा माल भी प्रदान करती है। इन व्यावसायिक फसलों में गन्ना, कपास, तिलहन, जूट व तम्बाकू प्रमुख है।

1.गन्ना–

गन्ना भारतीय मूल का पौधा व बाँस वनस्पति के वंश का है। गन्ना देश की व्यावसायिक फसलों में प्रथम स्थान रखता है। गन्ने के उत्पादन तथा उत्पादक क्षेत्र की दृष्टि से भारत विश्व में प्रथम स्थान रखता है। भारत विश्व के 50 प्रतिशत गन्ने का उत्पादन करता है। भारत में गन्ने का उत्पादन उष्ण कटिबंधीय भागों में किया जाता है। गन्ने के उत्पादन के लिए 15^0 से 30^0 सेन्टीग्रेड तापमान तथा 100 से 200 सेन्टीमीटर वर्षा तथा नदी घाटी क्षेत्रों की नमी युक्त चिकनी, दोमट तथा कछारी मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है। गन्ने के उत्पादन क्षेत्र में अग्रणी उत्तरी भारत है। परन्तु उत्पादन या पैदावार की दृष्टि से दक्षिणी भारत अग्रणी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि दक्षिण भारत की आर्द्र जलवायु गन्ने में रस की मात्रा को बढ़ाती है, जिससे उत्पादन अधिक होता है। भारत में गन्ने के प्रमुख उत्पादक राज्यों में उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, बिहार व गुजरात प्रमुख है। राजस्थान में गन्ना उदयपुर, गंगानगर,

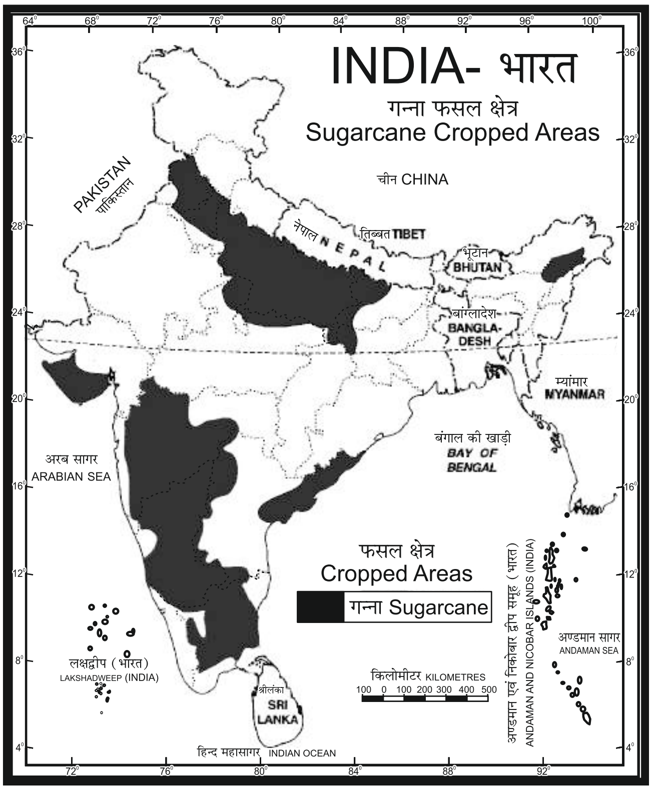

मानचित्र सं. 9.4 : भारत के गन्ना फसल क्षेत्र

भीलवाड़ा, चित्तौड़ व बून्दी में पैदा किया जाता है । भारत में गन्ने का उपयोग गुड़, चीनी व एल्कोहल बनाने के लिए किया जाता है।

2.कपास–

भारतीयों को कपास से सूती वस्त्र बनाने का ज्ञान प्राचीन समय से रहा है। देश की कुल कृषि भूमि के 6.7 प्रतिशत भाग पर कपास की फसल पैदा की जाती है। भारत में कपास खरीफ की ऋतु में बोई जाती है। इस फसल के लिए तापमान 20^0 से 35^0 सेन्टीग्रेड के मध्य तथा वर्षा 75 से 100 सेन्टीमीटर तथा गहरी तथा काली मिटटी व चूने व पोटाश की मात्रा वाली भूमि उपयुक्त मानी जाती है। भारत में कपास की तीन किस्में बोई जाती हैं।

1. **लम्बे व महीन रेशे वाली कपास (अमेरिकन कपास)**: भारत में कुल कपास उत्पादन का 50 प्रतिशत इसी के अन्तर्गत है। यह पंजाब, हरियाणा व राजस्थान में उत्पादित की जाती है।
2. **मध्यम रेशे वाली कपास** : भारत में कुल कपास उत्पादन का 40 प्रतिशत इसी कपास की किस्मों का होता है। इसका उत्पादन गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु में होता है।
3. **छोटे रेशे वाली कपास** : यह कुल कपास उत्पादन का मात्र 10 प्रतिशत है जिसे देश के अधिकांश भागों में अल्प मात्रा में बोया जाता है।

देश में कपास उत्पादन व उत्पादन क्षेत्र की दृष्टि से गुजरात प्रथम स्थान, महाराष्ट्र द्वितीय स्थान व आन्ध्रप्रदेश तीसरे स्थान पर हैं। पंजाब तथा हरियाणा में भी कपास का अच्छी मात्रा में उत्पादन किया जाता है। कपास का उत्पादन माँग से कम होने के कारण अतिरिक्त माँग की पूर्ति हेतु भारत अमेरिका, सूडान, केनिया तथा मिश्र से कपास का आयात करता है। राजस्थान में कपास का उत्पादन गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, कोटा, बून्दी तथा झालावाड़ में किया जाता है ।

3 जूट–

भारत में जूट एक महत्वपूर्ण रेशा फसल है। जूट के पौधे के तने कागज एवं लुगदी उद्योग तथा रेशेदार छाल बंधाई एवं बुनाई हेतु प्रयोग में लाये जाते हैं। उष्ण कटिबन्धीय आर्द्र जलवायु इसकी वृद्धि के लिए आवश्यक है। भारत में पश्चिम बंगाल जूट उत्पादन में अग्रणी राज्य है जहाँ देश की लगभग 60 प्रतिशत जूट का उत्पादन होता है। आसाम, बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश तथा त्रिपुरा राज्यों में भी जूट का

उत्पादन किया जाता है।

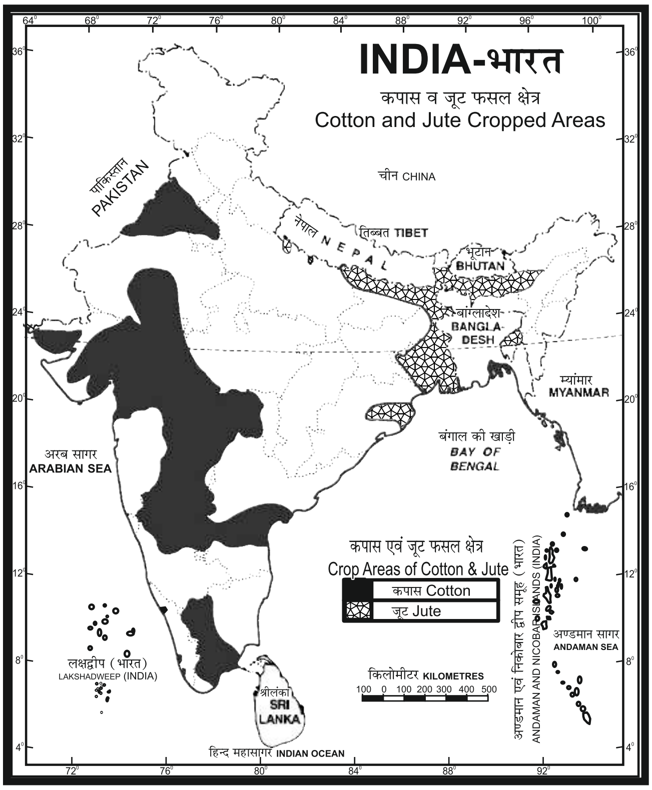

मानचित्र सं. 9.5 : भारत के कपास एवं जूट फसल क्षेत्र

4.तिलहन–

तिलहन फसलों के बीजों से खाद्य तेल की प्राप्ति होती है। भारत में विश्व के 10 प्रतिशत तिलहन का उत्पादन किया जाता है। तिलहन फसलें खरीफ तथा रबी दोनों ऋतुओं में उत्पादित की जाती है। भारत में तिलहन की मुख्य फसलों के रूप में मूंगफली, सरसों, तिल, सूरजमुखी, अलसी, अरण्डी, सोयाबीन आदि है। भारत में मूंगफली तथा सरसों दोनों फसलें कुल तिलहन उत्पादन का 80 प्रतिशत भाग रखती है।

मूंगफली–

यह ब्राजील मूल की फसल है। विश्व का 30 प्रतिशत मूंगफली उत्पादन भारत में ही किया जाता है। यह भारत में खरीफ की ऋतु में बोई जाती है। देश की कुल तिलहन फसल का 45 प्रतिशत भाग मूंगफली से प्राप्त किया जाता है। देश में मूंगफली की 85 प्रतिशत पैदावार गुजरात (प्रथम), आन्ध्रप्रदेश (द्वितीय), तमिलनाडु (तृतीय), महाराष्ट्र तथा कर्नाटक राज्यों में होती है। राजस्थान में चित्तौड़, सवाईमाधोपुर, भीलवाड़ा, जयपुर, गंगानगर, बीकानेर, हनुमानगढ़ तथा राजस्थान नहर के सिंचाई क्षेत्रों में उत्पादित की जाती है।

सरसों –

विश्व की 70 प्रतिशत सरसों भारत में उत्पादित की जाती है तथा देश की कुल तिलहन फसल का 35 प्रतिशत भाग सरसों से प्राप्त किया जाता है। देश की 85 प्रतिशत सरसों उतरी भारत में उत्पादित की जाती है। उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान (41 प्रतिशत) का भारत में प्रथम स्थान है। यह उत्तरप्रदेश (द्वितीय), मध्यप्रदेश (तृतीय), गुजरात, पंजाब तथा हरियाणा में भी पैदा की जाती है। राजस्थान में अलवर, भरतपुर, हनुमानगढ़, गंगानगर, सवाईमाधोपुर, भीलवाड़ा, जयपुर, बीकानेर तथा राजस्थान नहर के सिंचाई क्षेत्रों में उत्पादित की जाती है।

अन्य तिलहन फसलें –

अरण्डी का तेल मशीनों में स्नेहक (लूब्रीकेंट), साबुन बनाने तथा चमड़ा शोधन के काम में लिया जाता है। अरण्डी उत्पादन का 65 प्रतिशत आन्ध्र प्रदेश से प्राप्त किया जाता है। इसके अतिरिक्त गुजरात, कर्नाटक, उड़ीसा, तमिलनाडु एवं मध्यप्रदेश आदि राज्यों में भी अरण्डी का उत्पादन किया जाता है। देश में सोयाबीन उत्पादन का 70 प्रतिशत मध्यप्रदेश, 20

भारत में मुद्रादायिनी फसलों का उत्पादन

कृषिगत फसलें	क्षेत्र लाख हैक्टेयर			उत्पादन (मिलियन टन)			उत्पादकता किलोग्राम प्रति हैक्टर		
वर्ष	2012.13	2013.14	2014. 15	2012.13	2013.14	2014. 15	2012.13	2013.14	2014. 15
तिलहन	264.84	280.51	257.27 7	30.94	32.74	26ण68	1168	1168	1037
गन्ना	49.99	49.93	51.44	341.20	352.14	359.33	68254	70522	69857
कपास	119.77	119.60	130.83	34.22	35.90	35.48	486	510	461

नोट–कपास की एक गांठ 170 किलो ग्राम की होती है। इसमें उत्पादन लाख गांठों में है।
(यह आंकडे कृषि मंत्रालय भारत सरकार की वार्षिक रिपोर्ट 2015–16 से लिए गये हैं।)

प्रतिशत महाराष्ट्र व 10 प्रतिशत भाग राजस्थान में पैदा होता है ।

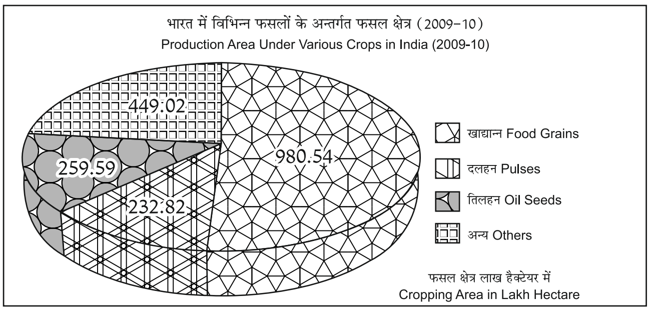

आरेख सं. 9.2 : भारत में विभिन्न फसलों के अन्तर्गत फसल क्षेत्र

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान

1. रोजगार का साधन–

कृषि भारत में 55.6 प्रतिशत जनसंख्या का प्रत्यक्ष रूप से रोजगार का साधन है। कृषि सहायक कारकों जैसे पशुपालन, मत्स्यपालन व वानिकी रोजगार के साथ उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति करती है जो कि अप्रत्यक्ष बड़ी जनसंख्या की आजीविका का स्रोत है।

2. सकल घरेलू उत्पाद में सहायक–

भारत में सकल घरेलू उत्पाद में कृषि व सहायक कारकों का योगदान अधिक रहा है। 1951 में जो योगदान 1993–94 की कीमतों पर 55.11 प्रतिशत था वह 1990 में 44.26 प्रतिशत रह गया। वर्ष 2007–08 में 1999–2000 की कीमतों पर 17.8 प्रतिशत तथा 2015–16 में 2011–12 की कीमतों पर 15.35 प्रतिशत रह गया। इस कमी का कारण औद्योगिक विकास में द्वितीय व तृतीय क्षेत्रों में उत्तरोतर वृद्धि रहा है।

MHACET

3. विदेशी व्यापार में योगदान–

भारत वैश्विक कृषि उत्पादों के निर्यात में 2.07 प्रतिशत योगदान रखता है। भारत कृषि उत्पादों के निर्यात की दृष्टि से विश्व का दसवां बड़ा देश है। यह भारत के कुल निर्यात का चौथा बड़ा सेक्टर है। निर्यात के रूप में चाय, चीनी, तिलहन, तम्बाकू, मसाले, ताजे फल व बासमती चावल आदि प्रमुख उत्पाद है। अन्य कृषि सामग्री जैसे जूट, कपड़े, मुर्गीपालन आदि उत्पाद भी इसमें सम्मिलित है, जबकि आयात में खाद्यान्न व खाद्य तेल सम्मिलित किया जाता है।

4. उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति–

भारतीय कृषि आधारित उद्योग जैसे कपड़ा उद्योग, चीनी उद्योग, वनस्पति तेल उद्योग, जूट उद्योग, रबड़ उद्योग तथा मसाला उद्योग को कच्चा माल कृषि फसलों से मिलता है।

5. औद्योगिक उत्पादों के लिए बाजार–

भारत की 60 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है जो कि कृषि पर निर्भर है। कृषि से सम्बन्धित यंत्रों जैसे ट्रैक्टर, जुताई उपकरण तथा खाद व कीटनाशकों के लिए यह क्षेत्र बाजार उपलब्ध कराता है।

भारतीय कृषि का आकलन करें तो हम यह पायेंगे कि कृषि जहाँ भारत की अर्थव्यवस्था का आधार है वहीं रोजगार तथा आय सृजन का बड़ा साधन है, परन्तु कृषि पर मानसून की निर्भरता तथा उसकी अनिश्चितता व अनियमितता तथा बाढ़ व सूखे की विभिषिका के कारण उत्पादन कम होता है। यदि भारत में कृषि का विकास करना है तो हमें कृषि के प्राचीन स्वरूप व उत्पादन का जीवन निर्वाहन प्रयोजन में परिवर्तन करना होगा, साथ ही कृषको में अशिक्षा, गरीबी, तथा ऋणग्रस्तता को दूर करना होगा, तभी भारतीय कृषि व कृषकों का विकास होगा।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1. भारत की 54.6 प्रतिशत जनसंख्या वर्तमान में भी कृषि तथा सम्बन्ध क्षेत्रों से आजीविका प्राप्त करती है।
2. भारत में कृषि को ऋतुओं के आधार पर तीन भागों में बांटा गया है।
3. भारत में उत्तर भारत के विशाल मैदानों की प्रधान फसल चावल एवं गेंहू हैं।
4. औद्योगिक फसलें– ऐसी फसलें जिनका उपयोग व्यावसायिक कार्यों के लिए या उद्योग में कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता हो, इन्हें मुद्रादायिनी या नकदी फसलें भी कहा जाता है।
5. भारत में हरित क्रान्ति के प्रभाव से गेहूँ की फसल के उत्पादन, उत्पादकता तथा उत्पादन क्षेत्र में सर्वाधिक वृद्धि दर्ज हुई हैं।
6. मिट्टी में नमी बनाए रखने के लिए कृत्रिम रूप से फसलों को जल प्रदान किया जाता है जिसे सिंचाई कहा जाता है।
7. भारत में चावल की तीन फसलों अमन (शीत–कालीन), आउस (शरद–कालीन), बोरो (ग्रीष्म–कालीन) का उत्पादन किया जाता है।
8. मक्का की फसल को खाद्यान्न व औद्योगिक दोनों रूप में उपयोग में लिया जाता है। भारत में उत्पादित की जाने वाली चावल के बाद दूसरी प्रमुख खरीफ की फसल है।
9. दक्षिण भारत की आर्द्र जलवायु के कारण गन्ने की

उत्पादकता दक्षिण भारत में अधिक है।

10. लम्बे व महीन रेशे वाली कपास (अमेरिकन कपास) जो कि कुल उत्पादन का 50 प्रतिशत है। यह पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में नरमा के नाम से जानी जाती है।
11. देश की 41 प्रतिशत सरसों राजस्थान में उत्पादित की जाती है राजस्थान के पूर्वी मैदानी भाग सरसों उत्पादन में अग्रणी है।

अभ्यास प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. भारतीय कृषि को ऋतुओं के आधार पर कितने रुपों में विभाजित किया है ?
2. भारत में बागानी फसलें कौन–कौन सी है ?
3. मुद्रादायिनी फसलों से क्या आशय है ?
4. भारत में चावल की कितनी फसलें ली जाती है ?
5. राजस्थान में शुष्क कृषि किन जिलों में की जाती है?
6. सिंचित कृषि से क्या तात्पर्य है ?
7. भारत में सर्वाधिक कपास का उत्पादन किन राज्यों में होता है ?
8. नरमा से आप क्या समझते हैं ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. भारत में कृषि फसलों को उपयोग के आधार पर उनका वर्गीकरण कीजिए।
2. मक्का की फसल के बारे में वर्णन कीजिए।
3. तिलहन की फसलों में सरसों का योगदान बताइए।
4. भारत के प्रधान फसल क्षेत्र बताइये।
5. मुद्रादायिनी फसलों में कपास के योगदान का वर्णन कीजिए।
6. बाजरे की फसल के बारे में वर्णन कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. भारत में कृषि फसलों में दलहन का योगदान बताइए।
2. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के योगदान पर प्रकाश डालिए।
3. भारत में कृषि को प्रयोग में लाई जाने वाली विधियों के अनुसार वर्गीकृत कीजिए।
4. भारत में खाद्यान्न फसलों पर प्रकाश डालिए।